18 / 02 / 83 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सदा उमंग उत्साह में रहने की अनुभूति

➢➢ सदा सेवा की लगन में मगन बनाने वाले

➳ _ ➳ दिला राम बाप

→ आज मेरे दिल की आवाज़

→ मेरे दिल की मीठी मीठी बातों का

◆ रेस्पांड देने

● मेरे पास आये है

➳ _ ➳ बापदादा अमृतवेले से लेकर सारे दिन में

→ मेरे भिन्न-भिन्न राज़ भरे हुए साज

→ कितने ही प्रकार के राज़

◆ सुनते रहते है।

➢➢ मेरे भिन्न-भिन्न प्रकार के साज़ को सुनते हुए

➳ _ ➳ बापदादा सार में मुख्य बातें सुना रहे हैं।

→ यथाशक्ति लग्न में मगन अवस्था की स्थिति में स्थित

→ मगन स्वरूप के अनुभवी मूर्त बन

◆ अटेंसन बहुत अच्छा रख चल रही हूँ।

➳ _ ➳ दिल की उमंग उत्साह के साथ

→ मैं बाप समान समीप रतन बन

◆ सदा सपूत बच्चे का सबूत दे रही हूँ।

➢➢ यह उमंग उत्साह मेरे उड़ती कला का आधार है।

➳ _ ➳ यह उमंग कई प्रकार के आने वाले

→ बिग्घों को समाप्त कर

◆ सम्पन्न बनने में बहुत सहयोगी बन रहा है।

➳ _ ➳ यह उमंग का शुद्ध और दृढ़ संकल्प

→ मुझे विजयी बनाने में

→ विशेष शक्तिशाली शस्त्र बन जाता है।

◆ सदा दिल मे उमंग उत्साह को

◆ इस उड़ती कला के साधन को

● कायम रख रही हूँ।

● कभी भी उमंग उत्साह को कम नही होने देती।

➳ _ ➳ उमंग है मुझे, मैं बाप समान

→ सर्व शक्तियों

→ सर्व गुणों

→ सर्व ज्ञान

◆ के खजानों से सम्पन्न हो रही हूँ।

➳ _ ➳ कल्प पहले की तकदीर नही

➳ _ ➳ लेकिन अनेक बार के तकदीर की लकीर

→ भाग्य विधाता द्वारा खींची हुई है।

→ इसी उमंग के आधार पर

→ उत्साह स्वतः ही उत्पन्न होता रहता है।

- ◆ वाहः मेरा भाग्य वाहः
- ◆ जो भी बापदादा ने टाइटल दिए है
- ◆ उसी स्मृति स्वरूप में रहने से
- ◆ उत्साह अर्थात खुशी स्वतः ही और सदा ही रहती है
  - ● सबसे बड़े ते बड़े उत्साह की बात है कि
  - ● अनेक जन्म बाप को ढूंढा
  - ● लेकिन इस समय बापदादा ने मुझे ढूंढा...

➳ _ ➳ सदा इसी उत्साह खुशी में रहती हूँ...

→ बाप ने मुझे अपना बनाया

- ◆ सदा उमंग उत्साह में रहने
- ◆ एक बल एक भरोसे में रहने से
  - ● हिम्मते बच्चे मददे बाप का सदा ही अनुभव होता रहता है।

➳ _ ➳ सदा उमंग उत्साह में रहने वाली बापदादा की मदद की पात्र...

→ हिम्मतवान आत्मा हूँ।

→ विधाता और वरदाता बाप के सम्बंध से

→ सदा अधिकारी बालक सो मालिक बन गयी हूँ...

→ सर्व खजानों के मालिक बन गयी हूँ।

- ◆ जिस खजाने में अप्राप्त कोई वस्तु नही।
- ◆ ऐसे मालिक बन सदा उमंग उत्साह में रहती हूँ।
  - ● यह स्लोगन सदा स्मृति रूप में है कि
  - ● "हम ही थे हम ही है और हम ही रहेंगे"।

➳ _ ➳ इसी स्मृति ने यहाँ तक लाया है।

→ बापदादा भी "सदा इसी स्मृति भव" का वरदान मुझे दे रहे है।

- ◆ मैं बापदादा की विशेष स्नेह सम्पन्न याद प्यार की पात्र बन गयी हूँ।